अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2015) | दिनांक 18.12.2015

तृतीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

बावन बोल – 20

प्र.1 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) इन्द्रियाँ कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ख) आठ कर्मों का उदय, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ग) चौदह गुणस्थानों में आस्त्रव व संवर के बोल कितने–कितने पाते हैं?

(घ) उदय के तैंतीस बोल किस–किस कर्म के उदय से?

(ङ) आठ कर्मों का उदय? उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम निष्पन्न किस–किस गुणस्थान तक?

प्र.2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) उदय निष्पन्न यावत पारिणामिक निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ख) आठ आत्मा में उदय भाव कितनी? यावत् पारिणामिक भाव कितनी?

(ग) बाइस परीषह किस–किस कर्म के उदय से?

(घ) संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ङ) अठारह पाप स्थान का उदय, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(च) पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

इक्कीस द्वार – 25

प्र.3 कोई चार बोल पूरे लिखें – 20

(क) औपशमिक सम्यक्त्वी (ख) सम्यक् मिथ्या दृष्टि (ग) मनःपर्यवज्ञानी (घ) चक्षु दर्शनी (ङ) अभाषक (च) अनाहारक।

प्र.4 कितने व कौन से पाते हैं? एक या दो शब्दों में उत्तर दें (कोई पांच) 5

(क) असंज्ञी में – योग व दृष्टि। (ख) सास्वादन सम्यक्त्वी में – उपयोग व चारित्र।

(ग) अवधी दर्शनी में – गुणस्थान व दण्डक। (घ) पद्म लेश्यी में – जीव का भेद, उपयोग।

(ड.) वचनयोगी में – योग व गुणस्थान। (च) सूक्ष्मसंपराय संयति में – उपयोग व योग।

(छ) भाषक में – जीव का भेद व योग।

जैन तत्त्वप्रवेश : द्वितीय व तृतीय खण्ड – 30

प्र.5 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्द अथवा एक वाक्य में लिखें – 5

(क) निक्षेप किसे कहते हैं? (ख) पतंगा में योग कौन से नाम लिखें।

(ग) दया व लौकिक दया किसे कहते हैं? (घ) व्यवहार नय किसे कहते हैं?

(ङ) परोक्ष के पांच भेद लिखें। (च) अगार धर्म के अंतिम पांच भेद लिखिए।

(छ) दृष्टिवाद के भेद लिखें व चौदह पूर्व किसके अंतर्गत हैं?

प्र.6 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 15

(क) प्रमाण किसे कहते हैं? उसके भेद, प्रभेद लिखें। (ख) श्रावक चिन्तन द्वार लिखें।

(ग) आगम किसे कहते हैं? मूलः, छेद, आवश्यक व अनुयोग तक पूरा द्वार लिखें।

(घ) दव देणो.....तुम एक। शील आदरियो.....इवरत मांय। इन दो दोहों को पूरा लिखिए।

(ङ) पुण्य पाप द्वार में से धर्म और पुण्य दो से शुरू करते हुए उस द्वार को पूरा लिखें।

(च) सम्यक दर्शनद्वार को प्रारंभ से लिखते हुए सम्यक्त्व के लक्षणों को व्याख्या सहित लिखें।

(छ) नय किसे कहते हैं? उसके प्रकारों के नाम लिखते हुए निश्चय नय व व्यवहार नय को व्याख्या सहित लिखें।

प्र.7 कोई दो द्वार लिखें। 10

(क) प्रश्नोत्तर द्वार में से जीव, अजीव आदि की पूरी चर्चा लिखें।

(ख) उपाषक (श्रावक) प्रतिमा द्वार लिखें।

(ग) व्रताव्रत द्वार को प्रारंभ से लिखते हुए प्रथम दो दोहे तक लिखें।

(घ) गुणस्थान द्वार को प्रारंभ से लिखते हुए आठवें गुणस्थान तक व्याख्या सहित लिखें।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 25

प्र.8 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्द अथवा एक वाक्य में लिखें – 9

चतुर्भंगी – (क) इन्द्रिय किस कर्म का उदय?

(ख) किस निर्जरा के जीव कम, किस निर्जरा के जीव अधिक?

पच्चीस बोल की चर्चा – (ग) तीन आत्मा किसमें (घ) जीव तत्त्व के नौ भेद किसमें

तत्त्वचर्चा – (ङ) पुण्य हेय या उपादेय? (च) दया छह में कौन नौ में कौन?

पच्चीस बोल – (छ) काल क्षेत्र क्या है? (ज) अठारहवां बोल लिखें।

कर्म प्रकृति – (झ) पराघात नाम किसे कहते हैं?

(ट) साम्परायिक सात वेदनीय की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति लिखें।

जैन तत्त्व प्रवेश –

(ठ) द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव गुणद्वार में से संवर तत्त्व लिखें।

प्र.9 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें – 16

(क) द्रव्य, गुण, पर्याय द्वार में प्रारंभ से लिखते हुए सामान्य गुणों की व्याख्या करें।

'अथवा'

भाव द्वार में क्षायोपशमिक भाव लिखें।

(ख) अनर्थदण्ड विरमण व्रत सूत्र सहित

'अथवा'

सूत्र सहित देशावकाशिक व्रत लिखें।

(ग) वेदनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

'अथवा'

प्रकृति बंध व स्थिति बंध लिखें।

(घ) पच्चीस बोल की चर्चा – जीव तत्त्व के छह भेद से लेकर तेरह भेद तक लिखें

'अथवा'

पांच योग से लेकर बारह योग तक लिखें।